बिना संवेदनशीलता की पत्रकारिता मानवता के लिए हानिकारक : बलदेव भाई शर्मा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : मंडी हाउस स्थित रवींद्र भवन परिसर में आयोजित साहित्योत्सव के पांचवे दिन 'अनुवाद कलाः सांस्कृतिक दायित्व' और 'मीडिया और साहित्यः सूचना एवं संवेदना' पर परिचर्चाएं आयोजित हुई। शाम को महमूद फारूकी की ओर से दास्तानगोई की शानदार प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया।

अनुवाद कलाः सांस्कृतिक दायित्व संगोष्ठी की शुरुआत प्रख्यात मराठी कवि एवं अनुवादक चंद्रकांत पाटिल ने किया। उन्होंने कहा कि अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी पूरी संस्कृति का अनुवाद होता है। केवल सृजनात्मक रचनाओं के अनुवाद को ही हम अनुवाद की श्रेणी में रख सकते हैं और यह काम सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण होता है। सुकृता पॉल कुमार ने कहा कि वर्तमान में अनुवादों का चयन बाजार के दबाव में हो रहा है, जो स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं है।

अनुवाद की पूरी प्रक्रिया रस्सी पर संतुलन के समान है जहां जरा सी भी नजर चूकने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। सत्र के अंत में साहित्य अकादमी की ओर से अनुवाद पर अवधेश कुमार सिंह के संपादन में प्रकाशित की गई महत्वपूर्ण पुस्तक हिंदी अनुवाद विमर्श (दो खंड) का विमोचन भी किया गया।

रवींद्र भवन में आयोजित संगोष्ठी में पुस्तक भेंट कर बलदेव भाई शर्मा (मध्य) का स्वागत करते चंद्रशेखर कंबार (दाएं) व के श्रीनिवासराव (बाएं) • फोटो सौजन्य-साहित्य अकादमी

दूसरे सत्र में मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना पर आयोजित संगोष्ठी में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के पूर्व अध्यक्ष बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि बिना संवेदनशीलता के की गई पत्रकारिता मानवता के लिए बहुत हानिकारक है।

उन्होंने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के कई उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में पत्रकारिता साहित्य से ही होकर निकली है। अतः वह हमेशा संवेदना से पूर्ण रही है। इस अवसर पर अकू श्रीवास्तव, संयुक्ता दास गुप्ता, बलदेवराज गुप्ता, डी उमापति, मधु आचार्य, आलोक गुप्त (गुजराती), जानकी प्रसाद शर्मा (उर्दू), प्रवासिनी महाकुड (ओड़िया), रेखा सेठी (हिंदी), अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार आदि ने भी अपने विचार रखे।

बिना संवेदना के पत्रकारिता निरर्थक: बल्देव

नई दिल्ली, 28 फरवरी (नवोदय टाइम्स): साहित्योत्सव के 5वें दिन शुक्रवार को 'मीडिया और साहित्य: सूचना एवं संवेदना' शीर्षक से एक परिचर्चा आयोजित की गई। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि पत्रकार, लेखक व पूर्व अध्यक्ष राष्ट्रीय पुस्तक न्यास बल्देव भाई शर्मा ने कहा कि अखबार जल्दी में लिखा हुआ साहित्य है और साहित्य पूरी निश्चितता के साथ लिखा हुआ अखबार है। अखबार और टीवी मीडिया में बौद्धिकता से ज्यादा संवेदना जरूरी होती है। बिना संवेदनशीलता के की गई पत्रकारिता मानवता के लिए बेहद हानिकारक है। पत्रकारिता में संवेदना लाना इसलिए आवश्यक है कि वर्तमान में मीडिया की पहुंच बहुत व्यापक हो गई और उसका तत्कालिक प्रभाव भी बहुत तेजी से सामने आता है। बल्देव भाई शर्मा ने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के कई उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में पत्रकारिता साहित्य से ही परिष्कृत होकर निकली है अत: वह हमेशा संवेदना से पूर्ण रही है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे अकादमी के प्रमुख चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि पहले कान के जरिए सूचनाओं का ग्रहण करते थे लेकिन आज के दौर में ये क्रिया बदली है अब आंखों के जरिए हम सूचनाएं देख रहे हैं और उनपर शीघ्रता से विस्वास भी कर रहे हैं। इसलिए विजुअल मीडिया को बेहद सतर्क होने की जरूरत है। परंपरा परिचर्चा के अलगे सत्र में संयुक्ता दासगुप्ता की अध्यक्षता में बलदेवराज गुप्ता, डी. उमापति एवं मधु आचार्य ने मीडिया और साहित्य: सूचना एवं संवेदना विषय पर अपने विचार व्यक्त किए, जिसमें बलदेवराज गुप्ता ने समाचार पत्रों की बिगड़ती भाषा पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में संवेदनाओं के साथ जब आप शब्दों को जोड़ने, तोड़ने लगते हैं तब आप शब्दों का कारोबार कर रहे होते हैं। मधु आचार्य ने समाज और सत्ता के ढांचे में आए बदलाव की तरफ इशारा करते हुए कहा कि इस कारण पूरे समाज की संवेदनाएं नष्ट हुई हैं।

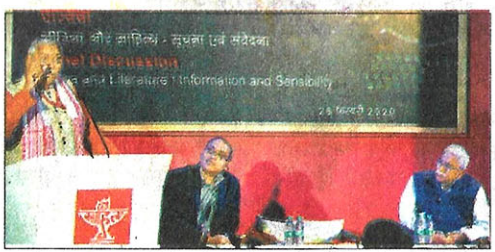

साहित्योत्सव में लोगों को संबोधित करते बल्देव भाई शर्मा।

अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी एक पूरी संस्कृति का अनुवाद होता है : चंद्रकांत

साहित्योत्सव में अनुवाद कला सांस्कृतिक दायित्व पर आयोजित विचार गोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मराठी कवि व अनुवादक चंद्रकांत पाटिल ने कहा कि अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी एक पूरी संस्कृति का अनुवाद होता है। जस भाषा से हम अनुवाद कर रहे हैं उस भाषा की संस्कृति की जितनी ज्यादा जानकारी अनुवादक को होगी, अनुवाद उतना ही सुंदर हो सकेगा। उन्होंने कहा कि जैसे पृथ्वी पर वही चीजें ज्यादा समय तक जीवित रहती हैं जो जैविक विविधता से परिपूर्ण होती है। उसी तरह वही अनुवाद लंबे समय तक जीवित रहेगा जो देश की भाषाई विविधता को अपने में समेटेगा। परिचर्चा के अध्यक्षीय वक्तव्य में अकादमी प्रमुख चंद्रशेखर कंबार ने अनुवादक के लिए अंग्रेजी पर निर्भरता की बजाए भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद पर जोर दिया। इसके अलावा शुक्रवार शाम को महमूद फारूकी द्वारा 'दास्तान-ए कर्ण अज महाभारत' दास्तानगोई प्रस्तुत की गई।

श्रेष्ठ अनुवाद के लिए देश की भाषाई विविधता जानना जरूरी: चंद्रकांत पाटील

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्योत्सव के पांचवे दिन शुक्रवार को 'अनुवाद कलाः सांस्कृतिक दायित्व' और 'मीडिया और साहित्यः सूचना एवं संवेदना' शीर्षक से दो परिचर्चाएं आयोजित की गई तथा शाम को महमूद फारूकी द्वारा दास्तानगोई प्रस्तुत की गई। प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी भी जारी रही। अनुवाद कलाः सांस्कृतिक दायित्व विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात मराठी कवि एवं अनुवादक चंद्रकांत पाटील ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी एक पूरी संस्कृति का अनुवाद होता है। केवल सृजनात्मक रचनाओं के अनुवाद को ही हम अनुवाद की श्रेणी में रख सकते हैं और यह काम सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण होता है। दूसरे शब्दों में कहे तो जिस भाषा से हम अनुवाद कर रहे हैं उस भाषा की संस्कृति की जितनी ज्यादा जानकारी अनुवादक को होगी, अनुवाद उतना ही सुंदर हो सकेगा। शरतचंद्र, प्रेमचंद, मंटो से लेकर अमृता प्रीतम तक का लेखन जो हमारे देश की साहित्यिक धरोहर हैं अनुवाद के कारण ही संभव हैं। जैसे पृथ्वी पर वही चीजें ज्यादा समय तक जीवित रहती हैं जो जैविक विविधता से परिपूर्ण होती है। उसी तरह वही अनुवाद लंबे समय तक जीवित रहेगा जो देश की भाषाई विविधता को अपने में समेटेगा। परिचर्चा का अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद की प्राचीन परंपरा के कारण ही भारत आज एक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। उन्होंने अनुवाद के लिए अंग्रेजी पर निर्भरता की बजाए भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद पर जोर दिया। सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पर अवधेश कुमार सिंह के संपादन में प्रकाशित की गई महत्वपूर्ण पुस्तक हिंदी अनुवाद विमर्श (दो खंड) का विमोचन भी किया गया। अगले सत्र में सुकृता पॉल कुमार की अध्यक्षता में आलोक गुप्त (गुजराती), जानकी प्रसाद शर्मा (उर्दू), प्रवासिनी महाकुड (ओड़िआ), रेखा सेठी (हिंदी) ने अपनी-अपनी भाषाओं में अनुवाद के समय सांस्कृतिक विविधता के कारण आनेवाली परेशानियों का जिक्र किया। सुकृता पॉल कुमार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि वर्तमान में अनुवादों का चयन बाजार के दवाब में हो रहा है, जो कि स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं है। अनुवाद की पूरी प्रक्रिया रस्सी पर संतुलन के समान है जहां जरा सी भी नजर चूकने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। मीडिया और साहित्यः सूचना एवं संवेदना विषयक दूसरी परिचर्चा के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात पत्रकार एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के पूर्व अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा थे। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि बिना संवेदनशीलता के की गई ।

अनुवाद केवल शब्दों का नहीं संस्कृति का होता है : चंद्रकांत

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 28 फरवरी।

साहित्योत्सव के पांचवे दिन शुक्रवार को 'अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व' और 'मीडिया और साहित्य : सूचना व संवेदना' दो विषयों पर परिचर्चा आयोजित की गई और शाम को महमूद फारूकी की ओर से दास्तानगोई प्रस्तुत की गई। प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी भी जारी रही।

अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन मराठी कवि एवं अनुवादक चंद्रकांत पाटील ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी पूरी संस्कृति का होता है। केवल सृजनात्मक रचनाओं के अनुवाद को ही हम अनुवाद की श्रेणी में रख सकते हैं और यह काम सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण होता है।

परिचर्चा का अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद की प्राचीन परंपरा के कारण ही भारत आज एक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। उन्होंने अनुवाद के लिए अंग्रेजी पर निर्भरता की बजाए भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद पर जोर दिया। सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पर अवधेश कुमार सिंह के संपादन में प्रकाशित की गई महत्त्वपूर्ण पुस्तक हिंदी अनुवाद विमर्श (दो खंड) का विमोचन भी किया गया।

श्रेष्ठ अनुवाद के लिए देश की भाषाई विविधता जानना जरूरी : पाटिल

नई दिल्ली (एसएनबी)। अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी एक पूरी संस्कृति का अनुवाद होता है। केवल सृजनात्मक रचनाओं के अनुवाद को ही हम अनुवाद की श्रेणी में रख सकते हैं और यह काम सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जिस भाषा से हम अनुवाद कर रहे हैं उस भाषा की संस्कृति की जितनी ज्यादा जानकारी अनुवादक को होगी, अनुवाद उतना ही सुंदर हो सकेगा। शरतचंद्र, प्रेमचंद, मंटो से लेकर अमृता प्रीतम तक का लेखन जो हमारे देश की साहित्यिक धरोहर है अनुवाद के कारण ही संभव है। जैसे पृथ्वी पर वही चीजें ज्यादा समय तक जीवित रहती हैं जो जैविक विविधता से परिपूर्ण होती हैं।

उसी तरह वही अनुवाद लंबे समय तक जीवित रहेगा जो देश की भाषायी विविधता को अपने में समेटेगा। यह बात जानेमाने मराठी कवि एवं अनुवादक चंद्रकांत पाटील ने 'अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व' विषयक संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर कही। साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित साहित्योत्सव के पांचवें दिन शुक्रवार को 'अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व' और 'मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना' शीर्षक से दो परिचर्चाएं आयोजित की गईं। अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद की प्राचीन परंपरा के कारण ही भारत आज एक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है।